Copyrighted Material

इश्क़ तुम्हें हो जाएगा

• अनुरक्ता राज नायर

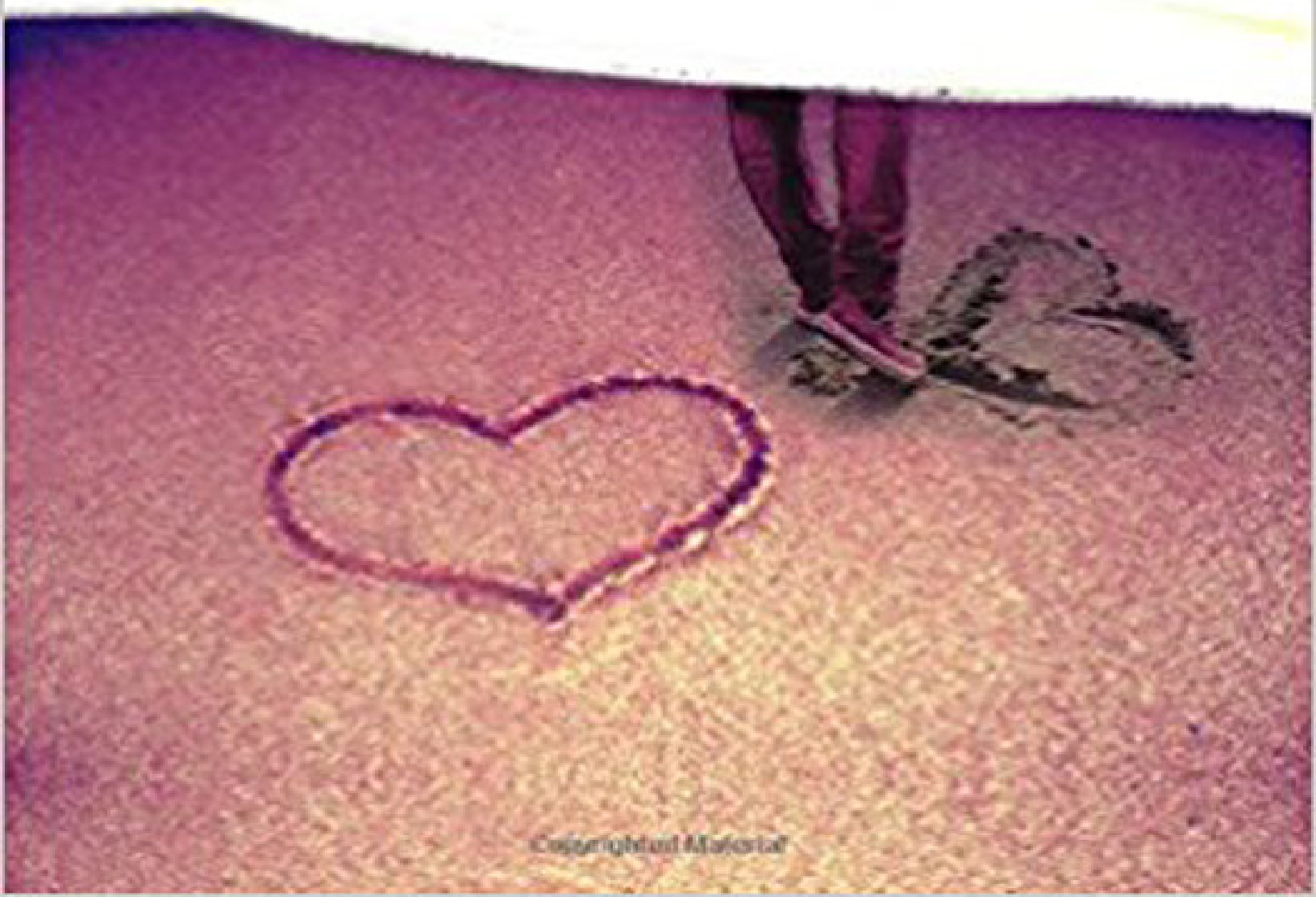

Copyrighted Material

इश्क़ तुम्हें हो जाएगा

(कविता-संग्रह)

इश्क़ तुम्हें हो जाएगा

अनुलता राज नायर

ISBN : 978-93-81394-86-1

प्रकाशक :
हिन्द-युग्म
1, जिया सराय, हौज खास, नई दिल्ली-110016
मो. - 9873734046, 9968755908

कला-निर्देशन : विजेंद्र एस विज | www.vijendrasvij.com

प्रथम संस्करण : 2014

© अनुलता राज नायर

Ishq Tumhen Ho Jayega
(A collection of poems by *Anulata Raj Nair*)

Published By
Hind Yugm
1, Jia Sarai, Hauz Khas, New Delhi- 110016
Mob : 9873734046, 9968755908
Email : sampadak@hindyugm.com
Website : www.hindyugm.com

1 st Edition : 2014

पापा ये आपके लिए

मेरे ख्वाब मेरी हक़ीक़त मेरा हाले दिल
मेरी डायरी के पन्ने
जब ज़िंदगी में एहसासे-सुकूँ था
तब लिखी गयी कोई कविता
जब कभी दिल परेशाँ हुआ
तब भी लिख डाली कोई एक सीली-सी नज़्म
ठहरे वक़्त में चलती रही क़लम
इश्क़ और दर्द की रोशनाई से
स्याह हुए पन्ने अब आपकी नज़र
और एक छोटा-सा वादा
कि पढ़ना मुझे तन्हाइयों में
इश्क़ तुम्हें हो जाएगा।

अनुक्रम

रूह
अँगूरी बादल
चुप्पी
कसम
उदासियाँ
पनीली उदासी
एक सवाल
स्वेटर
दुखों के बीज
स्मृतियाँ
अमलतास की डाली
विरासत
शब्द
मेरी नज़्म
राग-विराग
हैंडल विथ केयर
दुआ
मेरी नज़्म
मेरे कमरे का मौसम
प्रेम में होने का अर्थ
प्रेम का रसायन
दुआ- एक और

स्पर्श
निगाह
रिश्ते
इच्छाएँ
एहसास
धूप
पुल
साया
बदरा
इंतज़ार
उम्र
प्रेम का विज्ञान
बिंदी
गुज़र
ख़्याल
प्रेम का गणित
प्रेम का भौतिक शास्त्र
प्रेम की प्रकृति
बीज
तलाश
अँधेरा
ज़िंदगी
धड़कन
इन दिनों
मौत
इब्तेदा मोहब्बत की
इन्तेहा मोहब्बत की

फिर बेइंतहा मोहब्बत
मोहब्बत अब भी है
लौ
रेत
गुज़ारिश
यक़ीन
ख़्वाहिश
सपनों का सौदागर
जोग
सिंदूर
औरत की आकांक्षा
नदी
ग़ुलामी
नाकाम इश्क़
चिड़िया
प्रतीक्षा
यादों के पदचिह्न
कच्ची मूँगफलियाँ
बेनक़ाब
सुनो बरखा
तारों की घर वापसी
अजनबी
डेड एंड
महामुक्ति
एक ख़्वाब जलता हुआ
रूपांतरण
पनीली आँखें

चुभन
तलाश कविता की
एक ख़्वाब थका-सा
चिता
तुम्हारे बिना
रिहाई
बंधक
यात्रा
पापा ये आपके लिए
प्रेम कविता
याद गुज़री
झील

रूह

वो एक पाक रूह थी
तय था उसका ख़ुदा हो जाना
कि उसने इश्क़ के लिए दी थी जान अपनी
क़ब्र के सीने पर
रख गई थी लड़की
कुछ ख़त
शिकायतें
दर्द
और उम्मीद के टुकड़े भी...

कभी ख़ाली न हुई
वो क़ब्र
कि रूह आज़ाद नहीं होतीं
गर रक्खा हो कोई बोझ
उसके सीने पर...

अँगूरी बादल

(रिश्ते नहीं चाहते कि उन्हें परखा जाय, कसौटी पर कसा जाय।
अपनी मुलामियत से घबराते हैं रिश्ते।)

अँगूरी हो रक्खे थे बादल
उस रोज़
गहरे नीले आकाश में
गुच्छा-गुच्छा छितरे
जमुनी-गुलाबी रंगत लिए
धूसर बादल

तुमने कहा
ये बादल
तुम्हारे आँसुओं की वाष्प से बने हैं
मैंने मान लिया था उस रोज़
कि तुम दुनिया की
सबसे दुखी लड़की थी
वो बड़ी स्याह रात थी
तूफ़ानी
ख़ूब बरसे थे वो बादल
गुलाबी-जामुनी रंगत वाले
काले बादल
तुम्हारा कहा परखने को
चखी थी मैंने
कुछ बूँदें
सचमुच खारी थीं!

तुमने सही कहा था

कि मैं दुनिया का सबसे बुरा आदमी हूँ
मैंने मान लिया था उस रोज़
बिना ख़ुद को परखे हुए।

चुप्पी

चुप थे तुम
जब पूछा था लोगों ने
मेरा तुम्हारा रिश्ता

चुप लगा जाते हैं लोग
अक्सर यूँ ही
कि वो एक सुरक्षा कवच है उनका

गूँगी हो जाती है रात
जब चीखती है कोई बेबस
चुप रहता है समाज
सिसकियाँ सुनकर भी

बादलों के फट जाने पर
सवाल करती हैं लाशें
और मौन रहता है आसमान
ख़ामोश रहते वृक्ष
पत्तों को तजने के बाद
अनसुना करते हैं
चरमराते, सरसराते सूखे पत्तों की चीख

रिश्तों पर लगी घुन है
ख़ामोशी
चुप्पी लील जाती है
मन का विश्वास

चुप रह जाता है प्रेम
जब वो प्रेम नहीं रहता।

क़सम

रखकर हाथ
नीले चाँद के सीने पर
हमने खाई थीं जो क़समें
वो झूठी थीं

मुझे लगा तुम सच्चे हो
तुम्हें यक़ीन था मुझ पर

इसलिए तो खाई जाती हैं क़समें

अपने-अपने झूठ पर
सच की मोहर लगाने को।

उदासियाँ

उदासियाँ घर कर लेती हैं मन के कोनों में
बिना शोर-शराबे के
उदासियों की आमद होती है बड़े चुपके से
इनके पैरों की आहट नहीं होती
कि उदासियाँ अपने पैरों पर चिपका लेती हैं मोहब्बत के पंख
मोहब्बत के मर जाने के बाद
अपने नर्म पंजों के भीतर छिपाए रखती हैं कई दंश
उदासियों को आदत होती है बिन बुलाए आने की
और अनाधिकृत कब्ज़ा जमाने की
एक बार आने के बाद
ये पैर पसारती हैं और फैल जाती हैं हर जगह
दीवारों पर टँगी तस्वीरों में
बारिश की बूँदों में
बिस्तर की सलवटों पर
संगीत की धुनों पर
और डायरियों के पन्नों पर भी
उदासी छा जाती है
आसमान पर कुहासा बनकर
चेहरे पर झुर्रियाँ बनकर
रिश्तों की दरारों में भर जाती हैं उदासियाँ
तन्हाई और उदासियों में बड़ी यारियाँ हैं
उदासियाँ बात नहीं करतीं
उदासियाँ अपने साथ लाती हैं ख़ामोशियाँ
उदासियाँ बन जाती हैं
कुछ न लिख पाने की वजह
और कभी अनवरत लिखते जाने की
(सबसे ज़्यादा मैंने लिखी हैं उदासियाँ। उतनी ही भोगीं भी।

मगर हर उदासी का रंग अलग, स्वाद अलग, महक अलग।)

पनीली उदासी

ओक में भर लिया था
तुम्हारा प्रेम
मैंने
रिसता रहा बूँद-बूँद
उँगलियों की दरारों के बीच से
बह ही जाना था उसे
प्रेम जो था!

रह गई है नमी-सी
हथेलियों पर
और एक भीनी
जानी-पहचानी महक
प्रेम की

ढाँपती हूँ जब कभी
हथेलियों से
अपना उदास चेहरा
मुस्कुरा उठती हैं तुम्हारी स्मृतियाँ
और मैं भी

कि लगता है
वक़्त के साथ
रिस जाती हैं धीरे-धीरे
मन की दरारों से
पनीली उदासियाँ भी।

एक सवाल

तुम्हारे और मेरे बीच
तुम्हारे और मेरे बीच अगर कुछ होगा
तो वो सिर्फ़ प्रेम होगा
हमारी हथेलियों पर
हर पल अंकुरित होता प्रेम
स्पर्श की ऊष्मा से

और हमारे इर्द-गिर्द फैली हों
बेचैनियाँ
हमें एक-दूसरे की ओर धकेलती हुई
किसी और को
क़रीब आने की नहीं होगी इजाज़त
बस एक-दो जुगनू और कुछ तितलियाँ
सच मानो
बड़ी ज़िद्द की है उन्होंने

हाँ, एक महीन अदृश्य पर्दा होगा
तुम्हारे और मेरे बीच
कि छिपे रहें मेरे ग़म
कि तुम्हारी ख़ुशियों को नज़र न लगे उनकी

तो फिर ये तय हुआ कि
हमारे बीच अगर कुछ होगा
तो वो सिर्फ़ प्रेम होगा
या होगा एक पागलपन
या फिर दर्द
प्रेम के न होने का।

(तुमने क्या तय किया कहो न?)

स्वेटर

आँखें ख़ाली
ज़हन उलझा
ठिठुरते रिश्ते
मन उदास
सही वक़्त है कि उम्मीद की सिलाइयों पर
नर्म गुलाबी ऊन से एक ख़्वाब बुना जाय

माज़ी के किसी सर्द कोने में कोई-न-कोई बात
कोई-न-कोई याद ज़रूर छिपी होगी
जिसमें ख़्वाबों की बुनाई की विधि होगी
कितने फंदे, कब सीधे, कब उल्टे

बुने जाने पर पहनूँगी उस ख़्वाब को
कभी तुम भी पहन लेना
कि ख़्वाबों का माप तो हर मन के लिए
एक-सा होता है
कि उसकी गर्माहट पर हक़ तुम्हारा भी है।

दुखों के बीज

आस-पास कुछ नया नहीं
सब वही पुराना
लोग पुराने
रोग पुराने
रिश्ते नाते और उनसे जन्मे शोक पुराने
नित नए सृजन करने वाली धरती को
जाने क्या हुआ?
कुछ नए दुखों के बीज डाले थे कभी
अब तक अँखुआए नहीं
दुखों के कुछ वृक्ष होते तो
जड़ों से बाँधे रहते मुझे / तुम्हें / हमारे प्रेम को
सुखों की बाढ़ में बहकर
अलग-अलग किनारे आ लगे हैं हम।

स्मृतियाँ

तुम्हारी स्मृतियाँ पल रही हैं
मेरे मन की
घनी अमराई में
कुछ उम्मीद भरी बातें अक्सर
झाँकने लगती हैं
जैसे
बूढ़े पीपल की कोटर से झाँकते हों
काली कोयल के बच्चे

इन स्मृतियाँ ने यात्रा की है
नंगे पाँव
मौसम-दर-मौसम
सूखे से सावन तक
बचपन से यौवन तक

और कुछ स्मृतियाँ तुम्हारी
छिपी हैं कहीं भीतर
और आपस में स्नेहिल संवाद करती हैं
जैसे हम छिपते थे दरख़्तों के पीछे
अपने सपनों की अदला-बदली करने को
तुम नहीं
पर स्मृतियाँ अब भी मेरे साथ हैं
वे नहीं गईं तेरे साथ शहर

मुझे स्मरण है अब भी तेरी हर बात
तेरा प्रेम, तेरी हँसी, तेरी ठिठोली
और जामुन के बहाने से

खिलाई थी तूने जो निंबोली

अब तक ज़ुबाँ पर
जस-का-तस रक्खा है, वो कड़वा स्वाद
अतीत की स्मृतियों का।

अमलतास की डाली

फेनिल नदी में
कँपकँपाते चाँद का प्रतिबिंब
बिंब जो
ठहरा हुआ है वहीं
बहता नहीं लहरों के साथ
और उस पर झुकी वो
अमलतास की डाली
जिसने उतार फेंके थे
अपने सभी स्वर्ण आभूषण और
हरे रेशमी वस्त्र भी
लहरों संग बह जाने को
कि प्रेम में जोगन बन जाना सुहाता है
इसे पंखुड़ियों और पत्तों का झड़ना मत कहो
ये प्रेम है, विशुद्ध प्रेम
ठूँठ हुई डाली अपना सर्वस्व तजना चाहती है
प्रेम के लिए स्थान बनाने को
संसार के आवागमन से परे
मन समर्पित हो जाना चाहता है

हाँ, प्रेम की पराकाष्ठा भी तथागत बना देती है।

विरासत

माँ के ज़ेवरों की तरह
संभाल रखी हैं मैंने
तुम्हारी बातें
सहेज रखा है हर महका लम्हा
रेशम की लाल पोटली में

संभाला है
स्मृतियों को
एक विरासत की तरह
अगली पीढ़ी के लिए

कभी खोल लेती हूँ वो पोटली
देखती हूँ चमकते गहने
और
आँखों में हौले से उतर आते हैं वो मोती

ख़ालिस सोने की बनी
सच!
बुरे वक़्त का सहारा हैं वे स्मृतियाँ
माँ के ज़ेवरों की तरह।

शब्द

कहा गया हर शब्द
स्थाई है
हर अक्षर होता है कालजयी
शब्द के सृजन की प्रक्रिया अपरिवर्तनीय है
एक बार बन जाने के बाद
शब्द भटकते हैं
खोजते हैं ठौर
कहीं ठहर जाने को

शब्द कभी मरते नहीं
शब्दों के दिए घाव कभी भरते नहीं
मेरे कानों से टकराए हैं ऐसे कई शब्द
और उन्होंने स्थाई ठिकाना बना लिया
मेरे मन को

एक के ऊपर एक
परत-दर-परत टिकते ये शब्द
रौंदते मेरी शिराओं को
इनसे रिसता धीमा ज़हर फैलता रहा पूरे बदन में

दर्द असह्य हुआ
तो नोच-नोचकर शब्दों को
सृजन किया एक नज़्म का

चूँकि हर शब्द तेरा है
सो, दर्द भरी इस नज़्म का सेहरा तेरे सर।

मेरी नज़्म

सिमट गए जब
तुम्हारे कहे लफ़्ज़ मेरे ज़ेहन में
तब दर्द की एक नज़्म फूटी
तेरी ख़ुशबू से महकती इस नज़्म को
धो डाला मैंने
जुलाई की तेज़ बारिश में
कि नज़्म अब तरोताज़ा है
मिट्टी और घास की महक लिए
उसे निचोड़ा कसकर
कि रह न जाए एक भी रिसता एहसास बाक़ी
हटाने को यादों की सीलन
मिटाने को दर्द की सभी सिलवटें
फेर दी बेरुखी की गर्म इस्त्री उस नज़्म पर
पुरानी हर नज़्म की तरह इस नज़्म का सेहरा तुम्हारे सर नहीं
इसपर और मुझपर तुम्हारा कोई हक़ नहीं, कोई बाक़ी निशाँ नहीं
ये नज़्म मेरी है
और बाक़ी की ज़िंदगी भी सिर्फ़ मेरी।

राग-विराग

मेरे आँगन में
पसरा एक वृक्ष
वृक्ष तुम्हारे प्रेम का
आलिंगन-सा करतीं शाख़ें
नेह बरसाते
देह सहलाते
संदली गंध से महकाते पुष्प
कानों में घुलता सरसराते पत्तों का संगीत
जड़ें इतनी गहरी
मानो पाताल तक जा पहुँची हों
संभाल रखा हो घर को अपने काँधों पर

मगर ये तब की बात थी

अब आँगन में बिखरे हैं सूखे पत्ते
जिनकी चरमराहट ही एकमात्र संवाद है मेरा वृक्ष से
तने खोखले हैं
खुरदरा स्पर्श
जड़ों ने दीवारों में दरार कर दी है

ऐसा नहीं कि प्रेम के अभाव में जीवन नहीं
मगर
बड़ा त्रासद है
प्रेम का होना और फिर न होना।

हैंडल विथ केयर

मैंने पहुँचाया था प्रेम तुम तक
संभालकर
एहतियात से पैक करके
सभी आवश्यक निर्देशों के साथ
कि
ये हिस्सा ऊपर (दिस साइड अप)
हैंडल विथ केयर
ब्रेकेबल
डु नॉट रोल ऑर फोल्ड
मगर देखो न
आज छिन्न-भिन्न है हमारा प्रेम
बिखर गया कतरा-कतरा
तुम्हारी लापरवाही से

आज समझी कि
प्रेम के दिए जाने में कोई ग़लती नहीं
न ही प्रेम के किए जाने में है
प्रेम को सही तरीक़े से स्वीकारा जाना
इसे स्नेह से सहेजना भी ज़रूरी है

रिश्तों के टूटने की जवाबदेही सिर्फ़ एक की नहीं
सिर्फ़ मेरी नहीं, क़तई नहीं!

दुआ

वो उदास आँखों वाली लड़की
सुर्ख फूल
सब्ज़ पत्ते
नर्म हवा
रुकी-रुकी बारिश
और मिट्टी की सौंधी महक को चाहने वाली
माहताब-से बदन वाली
वो लड़की
उदास रहती थी
पतझड़ में
उसे सूखी ज़मीन और नीला आसमान ज़रा नहीं भाते
उसकी आँखों को चूमे बिना ही
चखा है मैंने
कोरों पर जमे नमक को
एक रात नींद में वो मुस्कुराई
और बादल उसके इश्क़ में दीवाना हो गया

यक़ीन मानो
खिली धूप में
बेमौसम बारिश
यूँ ही, बेमक़सद नहीं हुआ करती
(न कोई अनमेल ब्याह, न अपवर्तन के नियम)

नीले आसमान पर
लड़की के लिए मैंने लिखी जो दुआ
वही तो है ये इंद्रधनुष!

मेरी नज़्म

कहाँ चला जाता है प्रेम जब वो नहीं रहता? एक उदास चेहरे ने रपट
लिखवाई है खोजना है प्रेम को जो भाग गया है उसकी हँसी लेकर।

एक शोख़ नज़्म
फिसल कर मेरी क़लम से
बिखर गई
धूसर आकाश में

भीग गया हर लफ्ज़
बादलों के हल्के स्पर्श से
और वो बन गई
एक सीली उदास नज़्म

मेरी हर नज़्म
नतीजा है
मेरी लापरवाहियों का

सिर्फ़ तुम्हारे प्रेम पर लिखी नज़्में
होशियारी से लिखे गए
बेमायना अल्फ़ाज़ का ढेर हैं।

मेरे कमरे का मौसम

मेरे कमरे में
दीवारें नहीं हैं
बस खिड़कियाँ हैं
खिड़कियाँ-ही-खिड़कियाँ
हर खिड़की एक मौसम की ओर खुलती
किसी खिड़की से आती बारिश की मीठी बूँदें
तो किसी से जाड़े की कच्ची धूप भीतर झाँकती
या कभी भीतर आकर धुँध मेरा अंतर्मन भिगोती
एक खिड़की पर बसंत झूला करता है
(और उसकी ओट में छिपे रहते मन के सभी ज़र्द पत्ते)
फाल्गुन की खिड़की से दहकता पलाश भीतर आता
सोख लेता मन के सीलेपन को

सारे मौसम एक साथ होते हैं जब
सब खिड़कियाँ बंद होती हैं और
मेरे कमरे में
तुम होते हो

अहा!
तुम, मैं और तुम्हारा बारामासी प्रेम!

प्रेम में होने का अर्थ

मैं प्रेम में हूँ
इसका सीधा अर्थ है
मैं नहीं हूँ
कहीं और

प्रेम स्वार्थी होता है
ये दीवारें खड़ी करता है
प्रेमियों और शेष दुनिया के बीच
और जब ये नहीं होता है
तब ये दीवार गिरती नहीं
बस, सरक कर
आ जाती है
दोनों प्रेमियों के बीच

मैं प्रेम में हूँ
इसका अर्थ है
मैं उड़ रहा हूँ

प्रेम पंख देता है
प्रेमी पतंग हो जाते हैं
और जब ये नहीं रहता
तब लड़ जाते हैं पेंच
कट जाती हैं पतंगें
आपस में ही उलझकर

मैं प्रेम में हूँ
इसके कई अर्थ हैं
और सभी निरर्थक।

प्रेम का रसायन

जंगली फूलों-सी लड़की
मुझे तेरी ख़ुशबू बेहद पसंद है
उसने कहा था

“मुझे तेरा कोलोन ज़रा नहीं भाता”
बनावटी ख़ुशबू वाले उस लड़के से
बात करती लड़की ने
मन-ही-मन सोचा

लड़का प्रेम में था
उस महुए के फूल जैसी लड़की के
वो उसे पी जाना चाहता था शराब की तरह
लड़की को इनकार था
ख़ुद के सड़ जाने से

लड़का उसे चुनकर
हथेली में समेट लेना चाहता था
हुँह! वो छुअन
लड़की सहेजना चाहती थी
अपने चंपई रंग को

लड़का मुस्कुराता उसकी हर बात पर
लड़की खोजती रही
एक वजह
उसके यूँ बेवजह मुस्कुराने की
(इश्क़ के नाकाम होने की वजहें बड़ी बेवजह-सी होती है)।

दुआ- एक और

प्रेम में
रख दिए थे उसने
दो तारे मेरी हथेली पर
और कस ली थी मैंने
अपनी मुट्ठियाँ
भींच रखे थे तारे
तब भी, जब न वो पास था न प्रेम
जुदाई के बरसों बरस
उसकी निशानी मानकर

तब कहाँ जानती थी
कि मुरादों के पूरा होने की दुआ
हथेलियाँ खोलकर
टूटते तारों से माँगनी होगी
मगर
उस आख़री निशानी की क़ुर्बानी
मुझे मंज़ूर नहीं थी
किसी क़ीमत पर नहीं
मेरी लहुलुहान हथेलियों ने
अब भी समेट रखे हैं
वो दो नुकीले तारे।

स्पर्श

चेहरे पर पड़ती बूँदें बारिश की
मानो एक बोसा
संग हवा के सरसराता
छूकर निकला हो गालों को
और उस रेशमी स्पर्श ने
बेवक़्त ही
खोल दिया पिटारा खुरदुरी यादों का
जिन्हें समेटते सहेजते छिले जाते हैं
पोर मेरी उँगलियों के

बूँदे चाहे बादलों से टपकी हों
या मन के घावों से रिसी हों
अपने पास रखती हैं चोर चाभी
यादों की संदूकची की।

(जाने हम क्यूँ सहेजे रखते हैं इन पिटारों को /
संदूकों को और हर पल डरते हैं उनके खोले जाने से।
मेरे ख़याल से कुछ एहसास ऐसे होते हैं
जिनसे दिल कभी पूरी तरह आज़ाद नहीं हो सकता
या शायद होना ही नहीं चाहता।)

निगाह

सबसे है राब्ता
मगर तुम कहाँ हो
मेरी भटकती हुई निगाह को
कोई ठौर तो मिले!

रिश्ते

वहम
शंकाएँ
तर्क-वितर्क
ग़लतफ़हमियाँ
सहमे एहसास
लगता है मोहब्बत को
रिश्ते का नाम मिल गया।

इच्छाएँ

ऐसा नहीं कि
जन्म नहीं लेती
इच्छाएँ अब मन में
बस उन्हें मार डालना सीख लिया है मैंने
शुक्रिया, ऐ मोहब्बत!

एहसास

न मोहब्बत
न नफ़रत
न सुकून
न दर्द
कमबख़्त कोई एहसास तो हो
एक नज़्म के लिखे जाने के लिए।

धूप

सर्दियाँ शुरू हुईं
धूप का एक टुकड़ा
उसने मेरे क़दमों पर
रख दिया
आसान हो गई ज़िंदगी।

पुल

चलो
हम भी बनाएँ
एक पुल मोहब्बत का
जैसा उस नदी पर बना है
दोनों दंभी किनारों को जोड़ता हुआ।

साया

वो कोई शख़्स था
या साया
छू करके गुज़र गया
रोशनी में ही नज़र आया
साया ही होगा।

बदरा

बंजर पड़ी है ज़मीन
नेह से सींचा जो नहीं
मेरे हिस्से के बदरा
तुम कहाँ बरस गए?

इंतज़ार

सब कुछ जगमग
घर आँगन रौशन
मन के भीतर
किसी कोने को
इंतज़ार है
एक
कच्ची माटी के
दीये का।

उम्र

तेरे जाने के बाद
जिए हैं मैंने
एक बरस में कई बरस
कुछ साल तुमसे
बड़ी हो गई हूँ
उम्र में
अब तो मान लो कहा मेरा।

प्रेम का विज्ञान

तुम्हारे प्रेम से उत्सर्जित
पराबैंगनी किरणों ने
मुझे दृष्टिहीन कर दिया है
नष्ट हो जाती है
प्रेमोन्माद में
ओजोन लेयर।

बिंदी

उसे इत्ता-सा भी गुमान नहीं
कि आख़िर क्यूँ
आकाश की लाली
उसे खींचती है
अपनी ओर
वो क्या जाने
शाम का सिंदूरी रंग
किसी के माथे की बिंदी से
परावर्तित हुआ है।

गुज़र

तय होती है
सबके हिस्से की ज़िंदगी
जन्म के पहले से ही
तेरे साथ
उन चंद सालों में
जी ली मैंने
अपने हिस्से की
पूरी ज़िंदगी
अब कहो
कैसे गुज़ारूँ
अपनी बाक़ी की उम्र?

ख़्याल

वो
जब तब कहता
आज तेरा ख़याल आया
आज तू ही थी ख़्यालों में
तेरे ख़्याल से घिरा हूँ आज

सो मैंने एक 'ख़्याल' से
की गुज़ारिश
कि ले चल मुझे अपने संग, उसके पास
ख़्याल मुस्कुराया
पल-दो-पल के साथ का क्या करोगी?
ख़्यालों की उम्र ज़्यादा नहीं होती मेरी जान।

प्रेम का गणित

यदि प्रेम एक संख्या है
तो निश्चित ही
विषम संख्या होगी

इसे बाँटा नहीं जा सकता कभी
दो बराबर हिस्सों में।

प्रेम का भौतिक शास्त्र

तुम्हारे प्रेम में डूब गई
नहीं चाहती थी डूबना
डूब कर अपना अस्तित्व खोना मुझे नापसंद था

उत्प्लवन के सिद्धांत तय करते हैं शर्तें—
तैरते रहने की
डूब जाने की कोई शर्त नहीं।

प्रेम की प्रकृति

प्रेम का एक पल
छिपा लेता है अपने पीछे
दर्द के कई-कई बरस

कुछ लम्हों की उम्र ज्यादा होती है, बरसों से।

बीज

मैंने बोया था उस रोज़
कुछ
बहुत गहरे, मिट्टी में
तुम्हारे प्रेम का बीज समझकर
और सींचा था अपने प्रेम से
जतन से पाला था
देखो
उग आई है एक नागफनी

कहो, तुम्हें कुछ कहना है?

तलाश

परेशाँ हूँ
जाने कहाँ खो-सी गई हूँ
खोजती हूँ ख़ुद को
यहाँ / वहाँ / ख़ुद में / तुम में
हैराँ हूँ
तुम्हारे भीतर भी नहीं हूँ?
रात तुम्हारी नींद को भी टटोला
नहीं
तुम्हारे ख़्वाबों में भी नहीं

आख़िर कहाँ गुम हुई मैं, तुम्हें पाने के बाद।

अँधेरा

अँधेरे को मैंने
कसकर लपेट लिया
आग़ोश में
भींच लिया सीने से इस क़दर
कि उसकी सूरत दिखलाई न पड़े
पीछे खड़ी
कसमसाई-सी रौशनी
तकती थी मुझे

अँधेरे से जल गई लगती है रोशनी।

ज़िंदगी

मेरे हाथों में तुम्हारा हाथ
यानी
अवसर, संभावना, ख़ुशी
तुम्हारे काँधे पर टिका मेरा सर
यानी
प्यार, आशा, जादू
तुम्हारा मेरे क़रीब होना
यानी
ज़िंदगी, ज़िंदगी, ज़िंदगी।

धड़कन

उस रोज़
जब सीना चीरकर
तुम दे रहे थे
सबूत अपनी मोहब्बत का
तब चुपके से वहाँ
मैंने अपना एक ख़्वाब
छिपा दिया था

जो हलचल है तेरे दिल में उसे
धड़कन न समझना।

इन दिनों

इन दिनों
साँझ ढले, आसमान से
परिंदों का जाना
और तारों का आना
अच्छा नहीं लगता
गति से स्थिर हो जाना-सा
अच्छा नहीं लगता

इन दिनों
कुछ दिनों में
बीत गए कितने दिन
मानो
ढले हों
कई-कई सूरज
हर एक शाम।

इन दिनों
दहका पलाश
दर्द देता है
भरमाता है
इसका चटकीला रंग
जीवन की झूठी तसल्ली देता-सा
इन दिनों
तितलियाँ नहीं करती
इधर का रुख
न रंग है न महक है
इधर इन दिनों।

इन दिनों
ज़िंदगी के हर्फ़
उल्टे दिखाई देते हैं
तक़दीर आइना दिखा गई है
ज़िंदगी को इन दिनों

इन दिनों
चुन रही हूँ काँटे
जो चुभे थे तलवों पर
तुम तक आते-आते
तुम्हारे ख़याल से परे
रख रही हूँ अपना ख़याल
इन दिनों।

मौत

मौत कितनी आसान होती
अगर हम जिस्म के साथ
दफ़न कर पाते
यादों को भी

मौत क़ुदरत का तोहफ़ा है
ये मिटा देती है
सभी दर्द
उसके, जो मरा है

मौत अक्सर भ्रमित होती है
आती है उनके पास
जो जीना चाहते हैं
और उन्हें पहचानती नहीं
जो जी रहे हैं मुर्दों की तरह

मौत जब किसी
पाक रूह को ले जाती है
तब ज़रूर उसे
जी कर देखती होगी
मौत से मुझे
डर नहीं लगता
उसे लगता है डर
मेरी मौत से

मौत का दुःख
अक्सर एक-सा नहीं होता
कौन मरा?

कैसे मरा?
कब मरा?
पहले सब हिसाब किया जाता है।

इब्तेदा मोहब्बत की

तुमने कहा
मेरी आँखों में बसी हो तुम
मैंने कहा
कहाँ? दिखती तो नहीं
तुमने कहा
दिल में उतर गई
अभी-अभी।

इन्तेहा मोहब्बत की

उस रोज़ चाँद
आसमाँ के पहलू से
उतरकर
झील के ठंडे
नर्म बिछौने में सो गया
थक गया था वो
उन दिनों चाहतों का मौसम जो था।

फिर बेइंतहा मोहब्बत

दरवाज़े पर लगा गुलमोहर
जेठ में फूलता है जब
याद आता है मुझे वो दिन
जब तुम मुझे ब्याह लाए थे
सुर्ख जोड़े में।

मोहब्बत अब भी है

याद है तुम्हें?
उस रोज़ तुमने
कितनी कस के पकड़ी थी
कलाई मेरी
चूड़ियाँ टूटकर चुभ गई थीं
मेरी सूनी कलाइयों पर
वो निशान अब भी दिखते हैं।

लौ

उस नन्हे-से दीपक की तरह
तुम टिमटिमाते रहे
काँपती लौ बनकर
मेरे जीवन की उन सर्द रातों में
एक दीये की तपिश ही काफ़ी थी।

रेत

कौन कहता है
कि तू कण-कण में रहता है
तुझे पाने की जुस्तजू में
भटकती रही
सेहरा की तपिश में
पर जो हाथ आई, वो रेत ही थी
बंद मुट्ठी से भी सरक गई।

गुज़ारिश

गुज़ारिश है मेरी
ख़ुशी से
कि मिला कर मुझे कभी
ऐसे ही
बिना कोई सौदा किए
बिना किसी शर्त के
जैसे तितली
आ बैठती है
यूँ ही
किसी फूल पे।

यक़ीन

बड़ा आसान है मेरे लिए यक़ीं कर लेना जो कहीं है उस पर और जो नहीं है उस पर भी।
मुझे यक़ीन है हर एहसास पर जो किसी के दिल में पलता है। यक़ीन है, मुस्कराहट पर
जो होंठों पर खेलती है। यक़ीन है धड़कन पर जो ज़िंदा रखती है मुझे / तुम्हें।
जीना बड़ा आसान हो जाता है गर मन में विश्वास हो, आस्था हो।

मुझे यक़ीन है हाथों की लकीरों पर
बरगद तले बैठे बूढ़े फ़क़ीरों पर
जो कहते हैं कि सब ठीक होगा एक दिन

मुझे यक़ीन है हर अच्छे-बुरे इंसान पर
जिसे देखा नहीं उस भगवान पर
जो मुझे बनने नहीं देता बुरा कभी

मुझे यक़ीन है जगमगाते तारों पर
जितने हैं आस्माँ में, उन सारों पर
कि कोई एक टूटेगा ज़रूर और मुराद पूरी होगी मेरी

मुझे यक़ीन है तुम्हारे इरादों पर
अब तक किए सभी वादों पर
क्यूँकि उम्मीद पर ही तो दुनिया टिकी है

मुझे यक़ीन है प्यार पर
ख़ुदा के बनाए इस संसार पर
क्यूँकि यक़ीन ही तो हिम्मत और अवसर देता है प्यार के।

ख़्वाहिश

क्यूँ आसमाँ में है
सिर्फ़ एक ही चाँद
होते कई काश!
एक तेरा
एक मेरा
जितने तारे
उतने चाँद
टिमटिमाते तारे
मुस्काते चाँद

कभी कोई चाँद पूरा
कोई अधूरा
तीजा चौथ का
चौथा ईद का
कोई चाँद तुम-सा
कोई तुम कहो
मुझ-सा
तकते रहें हम
रात भर
खोजें चाँद
अपना-अपना
कभी धरती पर उतरे
कुछ एक चाँद
एक तुम मेरे बालों में खोंसो
एक मैं छुपा लूँ मुट्ठी में
गर बिखरे होते चाँद
यहाँ-वहाँ

जब चलते हम-तुम
संग-संग
तब पीछे चलता
चाँद का कारवाँ
काश!
आसमाँ में होते
ढेरों चाँद।
एक तेरा
एक मेरा
ये ख़्वाब नहीं
ख़्वाहिश है मेरी।

सपनों का सौदागर

गुलाबी सर्दी की उस दोपहर
आँगन में बैठी
ऊँघ रही थी
दरवाज़े पर आहट हुई
देखा कोई लंबी दाढ़ी वाला
बूढ़ा-सा राहगीर था
कहता था सपने लाया हूँ
लोगी क्या?
हैरान हुई मैं
सपनों का सौदागर!
उत्सुकतावश पूछ बैठी
कहो क्या मोल है?
मुस्कुराकर वो बोला
अनमोल सपनों का भला क्या मोल!
मुफ़्त ही बाँट रहा हूँ
मैंने कुछ सकुचा के पूछा
सुखद-से-सुखद स्वप्न भी मुफ़्त?
उसने जवाब दिया
हाँ, हर स्वप्न मुफ़्त
क्यूँकि किसी के भी
पूरा होने का कोई बंधन नहीं
कोई शर्त नहीं
फिर उनका क्या मोल
जो चाहे देखो।

जोग

तुम्हारी याद का
हल्दी-चंदन
माथे पर लगाए
जोगन बन जाना
मेरे लिए
आसान नहीं

कि सीले मौसम में
जब नदियाँ बदहवासी में
दौड़ रही होती हैं
समंदर की ओर
प्रकृति उकेरती है
लुभावने चित्र
और
हटा कर धूल की चादर
बूँदें निर्वस्त्र कर देती हैं पत्तों को

भीगा होता बर्हि और अंतस
तभी
कहीं भीतर से
रिस आता है ललाट पर
वो अभ्रक वाला
लाल सिंदूर
और उसी क्षण
खंडित हो जाता है
मेरा जोग
भंग हो जाती है

मेरी सारी तपस्या।

सिंदूर

किसी ढलती शाम को
सूरज की एक किरण खींचकर
माँग में रख देने भर से
पुरुष पा जाता है स्त्री पर संपूर्ण अधिकार
पसीने के साथ बह आता है सिंदूरी रंग स्त्री की आँखों तक
और तुम्हें लगता है वो दृष्टिहीन हो गई
माँग का टीका गर्व से धारण कर
वो ढँक लेती है अपने माथे की लकीरें
हरी लाल चूड़ियों से कलाई को भरने वाली स्त्रियाँ
इन्हें हथकड़ी नहीं समझतीं
बल्कि इसकी खनक के आगे
अनसुना कर देती हैं अपने भीतर की हर आवाज़ को
वे उतार नहीं फेंकती
तलुओं पर चुभते बिछुए
भागते पैरों पर
पहन लेती हैं घुँघरू वाली मोटी पायलें
वो नहीं देती किसी को अधिकार
इन्हें बेड़ियाँ कहने का

यूँ ही करती हैं ये स्त्रियाँ
अपने समर्पण का, अपने प्रेम का, अपने जूनून का
उन्मुक्त प्रदर्शन

प्रेम की कोई तय परिभाषा नहीं होती।

औरत की आकांक्षा

बहुत तक़लीफदेह था
ख़्वाबों का टूटना
उम्मीदों का मुरझाना
आकांक्षाओं का छिन्न-भिन्न होना

हर ख़्वाब पूरे नहीं होते
हर आशा और उम्मीद फूल नहीं बनती

सोच समझ कर देखे जाने चाहिए ख़्वाब
और पाली जानी चाहिए उम्मीदें
सो, अब तय कर दी है उसने
अपनी आकांक्षाओं की सीमा
और बाँध दी हैं हदें
ख़्वाबों की पतंग भी कच्ची और छोटी डोर से बाँधी

ऐसा कर देना आसान था बहुत
सीमाओं पर कंटीली बाड़ बिछाने में
समाज के हर आदमी ने मदद की
ख़्वाबों की पतंग थामने भी बहुत आए

औरत को अपना आकाश सिकोड़ने की बहुत शाबाशी मिली।

नदी

नदी
माँग रही है मुझसे
मेरे आँसू
कि वो समंदर होना चाहती है
बिना समंदर से मिले
नदी एक स्त्री है
हर स्त्री की तरह घायल
अपने ज़ख़्म ख़ुद चाटती हुई
जानती है जुटा लेगी
पर्याप्त खारापन
कई और स्त्रियों के साथ मिलकर
जो बहा रही हैं अपने स्वेद और अश्रु

बाहरी आवरण के भीतर
सब की सब स्त्रियाँ खारी हैं
कि सबके दुःख और दर्द एक से हैं

निष्कंप बहती रही नदी
जब स्त्रियाँ डूबी नदी में
और तट पर लगे वृक्ष काँप उठे
पुष्प-वर्षा हुई।

ग़ुलामी

तुम्हारी ग़ुलामी मैंने स्वीकारी
तुम्हारी ख़ुशी इसी में थी
और इसमें मेरा कुछ जाता नहीं था

बेशक बेड़ियों ने मुझे जकड़ रखा था मगर
रूह आज़ाद थी मेरी
और वक़्त भी आज़ाद था

पीछे छूट रहा था वक़्त और
आगे बढ़ती जा रही थी मैं
बीच में तुम खड़े थे
स्थिर, गतिहीन, आत्मसंतुष्ट
बेड़ियों में जकड़े मेरे शरीर को देखते

ज़ाहिर है
इस कहानी में प्रेम ने कोई किरदार नहीं निभाया।

नाकाम इश्क़

एक तूफ़ान की तरह आया था
तेरा इश्क़
अपनी सारी हदें लाँघता हुआ
डुबो डाला था मेरा सारा वजूद

नामंज़ूर था मुझे ख़ुद को खो देना
नामंज़ूर था मुझे तेरा नमक

सो लौटा दिया मैंने वो तूफ़ान वापस समंदर को
बस रह गए कुछ मोती, अटके मेरी पलकों पर
जो लुढ़क आते हैं गालों तक

कि नाकाम इश्क़ की निशानियाँ भी कहीं सहेजी जाती हैं!

चिड़िया

बीती रात ख़्वाब में
मैं एक चिड़िया थी

चिड़े ने
चिड़िया से
माँगे पंख
प्रेम के एवज में
और
पकड़ा दिया प्यार
चिड़िया की चोंच में

चिड़िया चहचहाना चाहती थी
उड़ना चाहती थी
मगर मजबूर थी

मौन रहना उसकी मजबूरी थी
या शर्त थी चिड़े की
पता नहीं

नींद टूटी
ख़्वाब टूटा
सुबह हुई

मैं एक चिड़िया हूँ
सुबह भी
अब भी।

प्रतीक्षा

मिलोगे तुम मुझे अब
जाने कितने अरसे बाद
लगता है सदियाँ बीत गईं
मानो हो किसी
पिछले जन्म का क़िस्सा

जाने कैसे पहचानूँगी तुम्हें
तुम भी कैसे जानोगे
कि ये मैं ही हूँ?

जिन्हें तुम झील-सी
शरबती आँखें कहते थे
अब पथरा-सी गई हैं
गुलाब की पंखुरी सामान अधर
सूख के पपड़ा गए हैं
इनमें भूले-भटके ही
आती है हँसी
पोपली-सी, खोखली-सी
परिवर्तन तो रेशमी ज़ुल्फ़ों के साये खोजने निकलोगे
तो चंद चाँदी के तारों में
उलझकर ज़ख़्मी हो जाओगे
स्निग्ध गालों की लालिमा
महीन झुर्रियों में लुप्त पाओगे

मगर ये सब तो होना ही था
तुम होते या ना होते

अवश्यंभावी है

बस फ़र्क़ इतना होता कि
तुम साथ होते तो
मेरी आँखें पथराती नहीं
उन पनीली आँखों में
तुम देख पाते अपना अक्स
और हम देखते
गुज़रते हुए वक़्त को
इन्हीं सब सहज बदलावों के साथ
कितना आसान होता यूँ
साथ-साथ बुढ़ा जाना।

यादों के पदचिह्न

आगे बढ़ते-बढ़ते
अनायास
कोई खींचता है पीछे
मुझे बेबस-सा करता हुआ
एक क़दम पीछे रखती हूँ और
धँसती चली जाती हूँ
यादों के दलदल में
गहरे, बहुत गहरे
डूबती उतराती हूँ
छटपटाती हूँ बाहर आने को
कभी मिल जाता है किसी हाथ का सहारा
कभी ख़ुद-ब-ख़ुद निकल आती हूँ
लगा देती हूँ अपनी पूरी शक्ति
चल पड़ती हूँ आगे
मगर इन पाँव का क्या?
ये तो सन जाते हैं यादों की मिट्टी से
और छोड़ जाते हैं अपने निशाँ
शायद, पीछा करती यादों के लिए।

कच्ची मूँगफलियाँ

बारिशों के बाद
जब आता है कच्ची मूँगफलियों का मौसम
तो तुम याद आते हो

तगाड़ी में भरी रेत पर
धीमी आँच पर सिंकती मूँगफलियाँ
तुम्हारे साथ बिताए पलों की पूरी फ़ेहरिस्त
लेकर खड़ी हो जाती हैं
धुएँ के साथ आती वो सौंधी ख़ुशबू है
या छिलकों का संदली रंग
या फिर नीचे जलते अँगारों की धीमी तपिश
पता नहीं वजह क्या है

यादें तो अक्सर सावन लाता है न बूँदों के संग?
पर तुम भादों में याद आते हो
कच्ची मूँगफलियों के आते ही।

मुझे अच्छे लगते हैं
क़रीने से सजे मूँगफलियों के ढेर
और तुम्हारी बेतरतीब-सी यादें।

बेनक़ाब

कभी पढ़ा है क्या तुमने
अँधेरों को
देख सके हो कभी
स्याह काग़ज़ पर उकेरे हुए
कोई शब्द?

सुना है क्या तुमने कभी
सन्नाटे को?
जब कोई नहीं दूर-दूर तक
तब पहुँची है क्या
कोई आवाज़
तुम तक?

महसूस किया है किसी को
किसी बियाबान में
आबादी से कोसों दूर
ख़ुद को पाया है
किसी के क़रीब?
अगर हाँ, तो फिर
तुम अवश्य जान गए होगे
कि तुम कौन हो
क्या वजूद है तुम्हारा
क्या सच है तुम्हारा

बनावटीपन और चकाचौंध से परे
बेनक़ाब अपने चेहरे को
पहचानते हो क्या?

कहो
क्या ख़ुश हो तुम
‘स्वयं’ से मिलकर?

सुनो बरखा

सुनो बरखा
भिगो दो मुझे
मेरा अंतस कि
कोई जान न पाए
पहचान न पाए
मेरे अश्रुओं की धार को

धो डालो मेरा मन
मेरे घाव
मन निर्मल, स्वच्छ कर दो
तुम दवा बन बरसो

भिगो दो हर उस हृदय को
जिस पर नेह की बूँद
न टपकी हो अब तक
बदरा
तुम प्रेम बन बरसो

तर कर दो हर अतृप्त आत्मा को
कोई प्यासा न रहे
इस निर्मम जग में
तुम चाह बन बरसो
बरसो उस बंजर भूमि में
जो दरक गयी है
जिसके हिस्से के बदरा
कहीं और बरस गए थे पिछले बरस
बरसो

तुम दुआ बन बरसो

बरसो उन सूखे पत्तों पर
जो गिर पड़े हैं नीर के अभाव में
बरसो उन शाखों पर जो
ठूँठ हो गई हैं
तुम्हारे वियोग में
तुम आस बन बरसो

बरसो
ख़ूब बरसो
सब कुछ हरा कर दो
हर नाउम्मीद पर
किसी उम्मीद की तरह बरसो।

तारों की घर वापसी

जानते हो
मखमली घास पर
बिखरा है जो
हरसिंगार
वो फूल नहीं है
वो तारे हैं
जिन्हें आसमान ने
पिछली रात
घर-निकाला दे डाला था
ज़रूर झगड़े होंगे
किसी बात पर

रात भर रोते रहे वो तारे
और उनके आँसुओं को
तुमने ओस समझकर
रौंद डाला
चाँदी का थाल लिए
उन फूलों को जो चुन रही है
वो कोई और नहीं
वो ख़ुद चाँद है
पहचानते नहीं क्या?
तारों की चिरौरी कर
उन्हें मनाकर ले जाने
धरती पर उतरा है चाँद

तारों बिना आसमान
सूना जो हो गया

चाँद अकेला जो हो गया था

सुनो जाना
प्रेम में तकरार सिर्फ़ हम नहीं करते।

अजनबी

कैसा अजीब शख़्स है वो
पुकारता है मुझे
मेरे नाम से
और कहता है कि
पहचानता नहीं
जानती हूँ
वो जानता है मुझे
और ये भी सच है कि
पहचानता नहीं
तभी तो
बेपरवाह है मुझसे
कोई फ़िक्र नहीं मेरी
कहती हूँ
छोड़ दे मेरा साथ
मगर
ये बात भी मेरी
वो कमबख़्त
मानता नहीं।

डेड एंड

सूना रास्ता ये
जाने किधर को जाता है
सीधी सड़क है
राह आसान दिखती है
मगर कोई राहगीर नहीं
सन्नाटा-सा पसरा है
हाँ, अक्सर कुछ उदास चेहरे
वहाँ से आते दिखते
ख़ाली हाथ
आँखों में लाल डोरे
शायद राख से सने हाथ
कहते थे
विदा कर आए हैं किसी को

फिर ना जाने क्यों
लोग कहते हैं
कि ये सड़क कहीं नहीं जाती?

महामुक्ति

हे प्रभु!
मुक्त करो मुझे
मेरे अहंकार से
दे दो कष्ट अनेक
जिससे बह जाए
अहं मेरा
अश्रुओं की धार से

मुक्ति दो मुझे
जीवन की आपधापी से
बावला कर दो मुझे
बिसरा दूँ सबको
सूझे ना कुछ मुझे
सिवा तेरे

डाल दो बेड़ियाँ
मेरे पाँव में
कुछ अवरोध लगे
इस द्रुतगामी जीवन पर
और दे दो मुझे तुम पंख
कि मैं उड़कर
पहुँच सकूँ तुम तक
शांत करो ये अनबुझ क्षुधा
ये लालसा, मोह-माया
छीन लो सब
जो 'मेरा' है
आँखों को स्वप्न से रीता कर दो

जिससे मैं भर लूँ
तुम्हें अपने नैनों में
धर लूँ हृदय में

हे प्रभु!
मन चैतन्य कर दो
मुझे अपने होने का
बोध करा दो
मुझे मुक्त करा दो।

एक ख़्वाब जलता हुआ

रात मैंने ख़्वाब में
सूरज को देखा था
जल उठा था मेरा ख़्वाब
मेरी बंद आँखों में
मेरे आँसुओं की नमी भी
बचा न सकी उसे जलने से
अब कैसे बीनूँ वो अधजले टुकड़े
कैसे सृजन करूँ एक नये ख़्वाब का
जिससे देख सकूँ
एक चाँद अबकी बार
एक पूरा चाँद
जो भर दे शीतलता
मेरी धधकती आँखों में
शांत कर दे उस आग को
जो जला गया सूरज, मेरे सीने में
इसके पहले कि
इस धुएँ से मेरा दम घुट जाए
काश! मुझे नींद आ जाए
और आ जाए चाँद
मेरे ख़्वाबों में
जी जाऊँ मैं
मेरे ख़्वाबों में।

रूपांतरण

स्त्री के भीतर
उग आती हैं और एक स्त्री
या अनेक स्त्रियाँ
जब वो अकेली होती है
और दर्द असह्य हो जाता है
फिर सब मिल कर बाँट लेती हैं दुःख

औरत अपने भीतर उगा लेती है एक बच्चा
और खेलती हैं बच्चों के साथ
खिलखिलाती है, तुतलाती है
घुलमिलकर
रूपांतरण की ये कला ईश्वर-प्रदत्त है

कभी-कभी
एक पुरुष भी उग आया करता है
स्त्री के भीतर
जब बाहर के पुरुषों द्वारा
तिरस्कृत की जाती है
तब वो सशक्त होती है उनकी तरह

सदियों से
इस तरह क़ायम है
स्त्रियों का अस्तित्व
कि उनके भीतर की उपजाऊ मिट्टी में
उम्मीद के बीज हैं बहुत
और नमी है काफ़ी।

पनीली आँखें

स्तब्ध-सी
शून्य में ताकतीं
सूनी-सूनी-सी
वो ख़ाली आँखें

सूखे होंठों वाले
उदास चेहरे पर टकी
डबडबाई-सी
वो पनीली आँखें

बंजर पड़ी
हृदय भूमि को
जब तब
आँसुओं से सींचती
जाने क्यों कभी
हँसती नहीं
वो नीली आँखें
शायद कुछ छिपा रखा है
मन की सिलवटों के पीछे
पढ़ न ले कोई
उसकी कहानी
इसलिए अकसर
झुका रखती है
वो पथरीली आँखें

जाने कैसा
भाग्य लिए जन्मीं

तब से अब तक
बस बरसीं जब तब
सूख गईं अब तो
वो कँटीली आँखें

अपने हर स्वप्न को
मरते देखतीं
अपनी ही आँखों से
उस मासूम-सी
लड़की की
वो सीली आँखें।

चुभन

कुछ दरका-सा
भीतर मेरे
तड़का हो जैसे
शीशा
चुभती किरचन
बढ़ती टीस
लहुलुहान अंतर्मन
और आहत-सा ये जीवन
डगमग-सा अस्तित्व मेरा
है स्तब्ध खड़ा
अपने न होने से
मानो मुँह औंधे गिरा

ये प्रश्न मेरे न होने का
तब हुआ खड़ा
जब मन का पंछी नील गगन में उड़ा ज़रा
तब पर कतरे मेरे अपनों ने
डैनों पर जिन्हें बिठा मैं ख़ूब उड़ी थी
एहसास चुभन का
तब जाकर हुआ बड़ा
जब आस लगी आगे बढ़ने की
तब डाली बेड़ियाँ पैरों में उन्होंने
जिनको ढो काँधे पे, मैं मील चली थी

आभास घुटन का हुआ बड़ा
जब हलक से निकले स्वर विरोध के
तब कटी ज़ुबाँ उन हाथों से

जिनको जीवन के गीत दिए थे

सो अब समझी
जब ज़ख़्म मिले
क्यों दरका कुछ भीतर मेरे, क्यों दर्द हुआ?

तलाश कविता की

मुझे तलाश है
एक कविता की
जो प्रवाहित हो
निर्बाध
हृदय से मेरे
बुझा दे तृष्णा मेरी
बुझा दे तृष्णा तेरी
तलाश है मुझे उस सरिता की

ना जाने क्यों
इन दिनों
शब्द नहीं सूझते
भावों के दलदल से
पार निकलने को
बस गीत रहे जूझते
ना प्रभु वंदन लिख पाऊँ
ना मन का कोई
क्रंदन लिख पाऊँ
महका दे काग़ज़
ऐसा ना चंदन लिख पाऊँ
न राग-अनुराग
न हृदय की कोई
अनबन लिख पाऊँ
न काशी न मथुरा
न मन का वृंदावन लिख पाऊँ

बंजर हो चली है

हृदय की भूमि
सूखे रक्त से
शब्दों की सरिता कैसे बहाऊँ?
कोलाहल है भीतर
ऐसे में सरल भाव कैसे उपजाऊँ
व्यथित मन की तृष्णा कैसे मिटाऊँ।

एक ख़्वाब थका-सा

जाने कब से पल रहा है
न जाने कब से चल रहा है
एक ख़्वाब
मेरे ज़ेहन में
मेरे मन में

एक ख़्वाब
जो थक गया है
पलते-पलते
चलते-चलते

थक गया है ये
मुकम्मल होने का इंतज़ार करते-करते
थक गई हूँ मैं भी
इसको ढोते-ढोते

सोचती हूँ
सुला दूँ इस ख़्वाब को
चिरनिद्रा में
सुला दूँ इसको सदा के लिए
तो शायद
मुझे भी नींद आ जाए
कुछ सुकून मिल जाए।
(जीने के लिए कभी कभी ख़्वाबों का टूटना भी ज़रूरी है)

चिता

जल रही थी चिता
धू-धू करती

बिना संदल की लकड़ी या घी के
हवा में राख उड़ रही थी
कुछ अधजले टुकड़े भी
आस-पास मेरे सिवा कोई न था
वो जगह श्मशान भी नहीं थी शायद
हाँ, वातावरण बोझिल था
और धुँआ दमघोटू
मौत तो आख़िर मौत है
चाहे वो रिश्ते की क्यूँ न हो।

लौट रही हूँ
प्रेम की अंतिम यात्रा से
तुम्हारे सारे ख़त जलाकर

बाक़ी है बस
एहसासों और यादों का पिंडदान

दिल को थोड़ा आराम है अब
हाँ, आँख जाने क्यूँ नम हो आई है
उसे रिवाजों की परवाह होगी शायद।

तुम्हारे बिना

ख़ामोश रहती हूँ
पथराई लगती होंगी आँखें
मत समझना कि ख़फ़ा हूँ
बस चुप हूँ मैं
क्योंकि कुछ कहा तो रुसवाई तुम्हारी होगी

हँसती हूँ खिलखिलाती हूँ
खोखलापन लगता होगा
मत करो सवाल, मान लो
बस ख़ुश हूँ मैं
क्योंकि उदास रहूँगी तब भी होंगे सवाल कई

तुम चले गए तो क्या
अकेली नहीं हूँ मैं!
कोई बेशक समझे, तुम नहीं हो
अब 'तुम' हूँ मैं
क्योंकि अकेले कब तक जिया जा सकता है।

यादों के दरीचों से अब
आती नहीं रौशनी या आवाज़
साया भी नहीं दिखता
वहीं गुम हूँ मैं
क्योंकि भीड़ में यादें भी साथ नहीं रहतीं।

रिहाई

नागवार गुज़रा मुझे
उसका यूँ चले जाना
चोट लगी, दिल पर
और अहम् पर भी
लहुलुहान से मन ने मन्नतें माँगी
रोया गिड़गिड़ाया मेरा आहत हृदय
आँसू बहाते धो आया कई मंदिरों की सीढ़ियाँ
न सुनी उसने, न मेरे ख़ुदा ने
न वो आया, न ख़ुदा आया।

कड़वा हो चला मन बहुत तिलमिलाया
पीपल पर मन्नत के धागे बाँधे
तांत्रिक-पंडित तंत्र-मंत्र सबकी राह पकड़ी
टोने-टोटके जादू-जंतर फूँके
मगर सब दिल बहलाने के चोचले निकले
न सुनी उसने, न मेरे ख़ुदा ने
न वो आया, न ख़ुदा आया

थक-हारकर अनमने से मेरे मन ने भी
भुला दिया उसको
भुला दिया उसके ता-उम्र साथ के वादे को
मुक्त कर दिया उसको मेरी यादों ने
और मुझको भी मिली आज़ादी, मोहब्बत की उम्र क़ैद से
मुझे मेरे अच्छे व्यवहार के कारण
शायद जल्द रिहा कर दिया गया था।

बंधक

ओ पिंजरे के पंछी
तू कितना बेबस लगता है
जाने कैसे तू
यूँ घुट-घुट के जीता है
कहाँ वो नीला आकाश
वो अनंत विस्तार
कहाँ ये नन्हा-सा पिंजरा
जो बेशक सोने का बना है
जहाँ तू नहीं पसार सकता अपने पंख भी
बाध्य है एकाकी जीवन जीने को
तेरी मीठी बोली
जिस पर सब रीझे जाते हैं
मुझे क्रंदन-सी लगती है
मानो तू आंदोलन कर रहा हो
स्वतंत्रता के लिए

तेरे पर कटे नहीं है
इसलिए तू और भी दुखी लगता है
क्यूँकि तू आश्रित नहीं है
बंधक है
तू पंख विहीन होता
तो शायद कुछ सुकून पाता
नियति को स्वीकार करता
और कुछ कम छटपटाता।

यात्रा

दिन भर की
भाग-दौड़
थकन
अब
घर लौटा हूँ
तकरीबन
सब कुछ
व्यवस्थित-सा था
रात बेहद सर्द थी मगर
बिस्तर नर्म
और कमरा गर्म था
फिर भी
सारी रात
करवटों में गुज़री
जाने क्यूँ
नींद नहीं आई
शायद यात्रा की
थकन ज़्यादा थी

माँ को बहुत दूर
वृद्धाश्रम
जो छोड़ आया था।

पापा ये आपके लिए

मैं अपने बाबा की
दुलारी बेटी हूँ
मेरी आधी उम्र गुज़र गई
मगर उनके लिए अब भी छोटी हूँ
बचपन से थामी उँगलियाँ
अब भी थाम रखी हैं
पहले पकड़ उनकी थी
अब मैंने जकड़ रखी हैं

तब उन्होंने सिखाया
पैरों पर खड़ा होना
चलना
अब मैं टोकती हूँ उन्हें
कि संभलकर चलें
तब उन्होंने मुझे
जी भर खिलाया-पिलाया
अब मैं ख़्याल रखती हूँ
कि वो क्या खाएँ क्या न खाएँ

तब जब कभी मुझे चोट लगी तो
वो अस्पताल ले दौड़ते
अब जब उन्हें अस्पताल ले दौड़ी
तो मुझे चोट लगी
जब कभी उनका दिल दुखाया
तब ख़ूब रोई
और जब-जब मैं रोई
जानती हूँ

उनका दिल ख़ूब दुखा होगा।

प्रेम कविता

निरर्थक है
लिखा जाना
प्रेम कविताओं का
कि जो लिखते हैं
उन्होंने भोगा नहीं होता प्रेम
और जो भोगते हैं
उन्हें व्यर्थ लगता है
उसे यूँ
व्यक्त करना...

मनगढ़ंत क़िस्से
काल्पनिक बातें
और कोरी बयानबाजियाँ हैं
प्रेम कविताएँ

प्रेमी नहीं करते बातें
चाँद-तारों की
नदी-पहाड़ों की
लहरों-किनारों की या
झड़ते चनारों की...

प्रेमी नहीं करते बातें
ऐसी-वैसी
कैसी भी

वे नहीं करते प्रेम से इतर
कुछ भी...

याद गुज़री

सरसराती, फन उठाती
बिन बुलाए
अनचाही एक
याद गुज़री...
जाने कब की
बीती बिताई
बासी पड़ी
एक बात गुज़री...
ले गई वो
चैन मन का
आँसुओं में
रात गुज़री...

भीगे-भीगे ख़्वाब सारे
भीगे थे हर सू नज़ारे
बादलों में भीगती
बारात गुज़री...
महके गुलाबी
काग़ज़ों में
झूठी एक
सौग़ात गुज़री...
बंद करके
रख दिए थे
मैंने माज़ी के दरीचे
सेंध करके
छुप-छुपाती
याद वो बलात गुज़री...

सच का चेहरा
मुझको दिखाती
आईना ले साथ गुज़री

सरसराती-फनफनाती
विष भरी
एक याद गुज़री...

झील

गुनगुना रही थी झील
एक बंदिश राग भैरवी की
कि पानी में झलक रहा था अक्स
उसके ललाट की बिंदी का

उसके डूबे हुए तलवों ने
पवित्र कर दिया था पानी
कि घुल रही थी पायलों की चाँदी
धीरे-धीरे...

झील की सतह पर
उँगलियों से अपनी
वो लिखती रही
प्रेम

पढ़ा था झील ने
और उसको
फ़रिश्ता क़रार दिया।